R.N.I.- UP-HIN/2001/3996
ISSN- 2581-6128

स्थापन दिवस के 25वें वर्ष में प्रवेश

शहर समता

(हिंदी साप्ताहिक)

शोध पत्र

www.shaharsamta.com

'कर्मक्षेत्र रणभूमि यही है, मानव हो तुम कर्म करो।
कर्म से कभी विमुख न रहना, मन में यह संकल्प करो।'-
उमेश श्रीवास्तव

संस्थापकः स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 श्रीमती साधना श्रीवास्तव
सम्पादकः उमेश चन्द्र श्रीवास्तव

सरिता कपूर विशेषांक

वर्ष 25 | अंक 45 | रविवार, इलाहाबाद, 29 मार्च 2026 | पृष्ठ 4 | विशेषांक मूल्यः 3 रू0

❖ संपादकीय

इस बार सरिता कपूर

उमेश श्रीवास्तव
संपादक

शब्दों का है खेल है सारा,
शब्द बनाते हैं इतिहास ।
जीवन की आपाधापी में,
शब्द बताते हैं सब त्रास ।
शब्दों का अवगुंठन प्यारा,
बिम्ब बनाते आस-पास ।

तो बात हो रही है गाजियाबाद की सरिता कपूर की । प्रयाग की पावन धरती में पाली बढ़ी और अब गाजियाबाद में अपना बसेरा बना कर रह रही कवयित्री सरिता कपूर ने जीवन में बहुत से उतार-चढ़ाव देखे हैं । स्वास्थ्य संबंधी दिक्कतों को झेलती हुई कवयित्री सरिता कपूर ने अपने घरौंदे को भी संभाला और काव्य जगत में भी अपनी सुंदर-सुंदर रचनाओं से सभी का मन मोहा।

कवयित्री सरिता कपूर की काव्य यात्रा की कुछ बानगी देखिए

पहली बानगी

“
जिन्दगी ने एक दिन जब आगे बढ़ने की ,
प्रेरणा मन में जगायी --
मन में इन्द्रधनुष का उदय होते ही ,
अकेली ही अपनी राह पर निकल पड़ी ।

दूसरी बानगी

“
वे सिर पर बोझ ढोने से बचते ही रहे ,
हम माथे पर पसीने को टपकाकर चलते ही रहे ।
वे बीते कल की बातों के संदर्भ कहते ही रहे ,
हम आज में कल (भविष्य)की राह ढूंढते ही रहे ।

तीसरी बानगी

“
सुन्दर सपने सजाकर आए थे इस शहर में ,
पर दो जून की रोटी मुश्किल से जुटाते रहते हैं ।
संकट के बादलों ने घेर रखा है जकड़कर ,
पर दिल है बेखबर जहां नित सपने सजते रहते हैं।

गाजियाबाद की वरिष्ठ कवयित्री सरिता कपूर को उनकी इसी विलक्षण प्रतिभा के चलते फरवरी माह का सावित्री देवी स्मृति साहित्य सम्मान देते हुए संस्था प्रसन्न है । संस्था आपके सुंदर भविष्य की कामना करता है । अंक कैसा लगा, प्रतिक्रिया जरूर दीजिएगा ।

अंत में

जीवन के इस दौर में ,
ठौर ठौर संघर्ष ।
इसी से मिलता है जीवन में ,
हर पल हर क्षण हर्ष ।

उमेश श्रीवास्तव

❖ जीवन संघर्ष

अंधेरे में मंजिल की तरफ

सरिता कपूर
कवयित्री

'अंधेरे में मंजिल की तरफ अकेले ही चले थे ,
सीमा के प्रहरी की तरह हम भी डटे थे ।
अवसर हाथ से छूटे फिर भी परवाह नहीं थी ,
सदा आगे बढ़ चले तो संभावनाएँ खड़ी थी ।'

जीवन में आत्म-संघर्ष का पान हर किसी को किसी न किसी रूप में होता है--कोई इसे चुनौती मान सकारात्मक सोच लिए समाधान की खोज कर आगे बढ़ता जाता है, तो कोई नकारात्मक प्रवृत्ति के कारण मन में अवसाद भर बैठ जाता है, जिससे निकलने का रास्ता नहीं सूझता ।

पावन नगरी प्रयागराज में मध्यमवर्गीय संयुक्त परिवार में मेरा जन्म हुआ था। मेरी आत्म संस्था (अल्मामैटर) सरस्वती शिशु मंदिर से ही मैं पढ़ाई के साथ-साथ, विद्यालय के हर क्रियाकलापों में हिस्सा लेती थी। परास्नातक (एम. ए.) तक की शिक्षा में स्नातकोत्तर के द्वितीय वर्ष मे मुझे स्वास्थ्य की गंभीर समस्या ने घेर लिया। मेरा स्वास्थ्य इतना बिगड़ गया, कि मेरे जीवन-मृत्यु का सवाल हो गया। मेरे स्नातकोत्तर का द्वितीय वर्ष खराब हो गया। मैं गंभीर बीमारी से एक वर्ष संघर्ष करती रही, मेरी माँ ने तो मान लिया था की अब मैं नही बचूंगी, किन्तु समय के गर्भ में कुछ और ही छुपा था। डाक्टर ने कहा की एक वर्ष तक अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान दो उसके बाद कुछ करने को सोचना। मैं बीमारी से संघर्ष में विजयी हुई और अपनी शिक्षा पूर्ण की। एम.ए. करने बाद बी.एड. करना चाहती थी पर उस समय इलाहाबाद(जो अब प्रयागराज है),विश्वविद्यालय में बी.एड. नहीं था, दूसरे शहर भेजना घर वालों को मंजूर नहीं,अतः वो संभव नहीं हो पाया। उन दिनों लड़कियों के पढ़ाई और पेशे को लेकर स्वयं के निर्णय की महत्ता कम और घर वालों के मुताबिक ही चलना पड़ता था। तिस पर हमारी पीढ़ी में मध्यमवर्गीय परिवारों की सामाजिक व्यवस्था के नियम-कानून लड़कियों की सुरक्षा के प्रति अत्यधिक संवेदनशील हुआ करते थे। फिर मैंने सिविल सर्विसेज के लिए किसी तरह फार्म भरा, पर उसी बीच मेरी शादी हो गई, और वो सपना समय की गति में कहां गया पता नहीं। विवाह से पूर्व पति की सरकारी नौकरी में होने का पता था, लेकिन उनके कार्य की प्रकृति क्या है, ना मेरे परिवार को पता था ना उनके परिवार को सिवाय मेरे स्वसुर के। मेरे पिता को मेरे स्वसुर ने मेरे होने वाले जीवनसाथी के कार्य की प्रकृति के बारे में बता दिया था।

पति राष्ट्रीय सुरक्षा में, चुनौतीपूर्ण तैनातियों में जोखिम होने के कारण शादी के बाद आशंकित रहते, कि यदि उन्हें कुछ हो गया तो उनके स्थान पर मिली नौकरी करनी पड़ेगी। मेरे पति की सरकारी नौकरी ऐसी थी की मुझे कुछ पता नहीं था कि वो कहाँ जाते हैं क्या करते हैं। उनके दफ्तर आने जाने का कोई निश्चित समय नहीं था, न दिन न रात। धीरे-धीरे समय के साथ समझ आने लगा, कि वो राष्ट्रीय सुरक्षा से संबंधित किस तरह के जोखिम भरी सरकारी नौकरी में हैं। एक दिन इसी दुविधा से परेशान हो, अपने मन की बात उन्होंने कही,और उन असामयिक परिस्थितियों में परिवार को चलाने में सक्षम होने के लिए मुझे बी.एड. करने की सलाह दी । मेरी बी.एड. की इच्छा अब असामान्य परिस्थिति की आवश्यकता थी, मैंने फार्म भर दिया, लेकिन जवाब न आने से मैं उस प्रयास को भी भूल चुकी थी, पर अचानक प्रवेश मिलने का पत्र उस वक्त आया, जब मेरी नन्हीं सी बच्ची पैदा हुई । मैंने सोचा 1 महीने की बच्ची और शरीर भी कमजोर..संभव नहीं हो पाएगा, परंतु पति ने कहा अवसर दरवाजे पर खड़ा है, हाथ से जाने मत दो, सुअवसर बार-बार नहीं मिलते। अब मुझे अपने अध्ययन, अपनी बेटी और अपने पति के नौकरी के बीच सामंजस्य स्थापित करने का संघर्ष करना पड रहा था। सबकी अपनी प्राथमिकता

“
मुझे अपने जीवन में जिम्मेदारियों को निभाते हुए, आत्मसंघर्ष का परिणाम यह मिला की हमारी दोनो बेटियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त करके आज उच्च पदों पर कार्यरत हैं और अपने-अपने जीवनसाथी के साथ पूरे आत्मविश्वास से सुखी वैवाहिक जीवन जी रही हैं।

थी । किसी को मैं अनदेखा नही कर सकती थी। अब तिकोना संघर्ष मेरे सामने था जो बहुत कठिन था, किन्तु मैने लड़ाई लड़ने की ठान ली। ईश्वर पर अटूट विश्वास होने और पति के पूर्ण सहयोग से अत्मविश्वास मन में भर समय के इस चक्र की चुनौती पर भी विजय मिली।

आत्मनिर्भर हो शिक्षिका की नौकरी करने के शुरुआती दिन....उन्हीं दिनों एक बेटी का स्कूल जाना आरंभ...और हमारी छोटी बेटी का जन्म, पति की नौकरी की प्रकृति के कारण फिर समझौता किया। बच्चों की शारीरिक व मानसिक संतुल न के साथ अच्छी परवरिश- अपने मुख्य उद्देश्य को प्राथमिकता बनायी, क्योंकि मेरे अध्यापिका बनने का उद्देश्य बच्चों को विद्यालय में पढ़ाना और आर्थिक रूप से पति के साथ मिल कर परिवार की अन्य जरूरतों को पूर्ण करना था। वो मैं अपनी ही बेटियों को कोचिंग ना भेजकर घर पर ही पढ़ाकर कर सकती थी। ऐसे में पति के नौकरी और उनके कार्य की प्रकृति की वजह से जो समय वो घर में बच्चों को नहीं दे पाते थे, उसमें सहयोग कर सकती थी। देश की सुरक्षा में जितने लोग कार्यरत हैं, उनके साथ उनके परिवारजनों को भी अनेक मानसिक चिंताओं के साथ निजी जीवन में त्याग करना ही पड़ता है । जिसके लिए मेरे मन में कभी ग्लानि नहीं हुई, बल्कि मैं सदा ही गर्व महसूस करती हूँ। हां, मैंने अपनी शिक्षा का उपयोग अपनी दोनों बेटियों को पढ़ाने और घर को सुनियोजित तरीके से चलाने में किया। इस प्राथमिकता को पूर्ण करने के लिए समय की मांग को देखते हुए कंप्यूटर का कोर्स करके बच्चों को पढ़ाई के नवीनीकरण में मार्गदर्शन किया। बच्चों के बड़े होते होते समाज में तेजी से हो रहे परिवर्तनों के कारण मानसिक चुनौतियों को और समझने के लिए समय निकाल कर काउंसलिंग का कोर्स कर लिया, जिससे अपनी प्राप्त शिक्षा के खजाने से मनोविज्ञान की पढ़ाई का सदुपयोग अपने बच्चों के साथ-साथ अपने इर्द-गिर्द जरूरतमंद लोगों को सही काउंसलिंग करने में करती रही हूँ। साथ ही साथ दिव्यांग बच्चों के साथ स्वैच्छिक रूप से कार्यरत होकर समाज के लिए कुछ कर गुजरने की शुरुआत से मन में चाह को पूर्ण कर आत्म संतुष्टि का अनुभव करती हूँ ।

मुझे अपने जीवन में जिम्मेदारियों को निभाते हुए, आत्मसंघर्ष का परिणाम यह मिला की हमारी दोनो बेटियाँ उच्च शिक्षा प्राप्त करके आज उच्च पदों पर कार्यरत हैं और अपने-अपने जीवनसाथी के साथ पूरे आत्मविश्वास से सुखी वैवाहिक जीवन जी रही हैं। जिन्हें देख मन ही मन गौरवान्वित होने के साथ, अपनी लेखनी को बचपन से कागज पर उकेरने के जुनून को आगे बढ़ाने के साथ, काउंसलिंग से समाज में कुछ योगदान कर रही हूँ और अपने अवकाश प्राप्त जीवनसाथी के साथ देश-विदेश की यात्रा करती और वहाँ के सांस्कृतिक और सामाजिक विकास का अध्ययन भी करती हूं।

जीवन के इस मोड़ पर पठन-पाठन और देश-विदेश की यात्रा करते हुए मेरा निष्कर्ष यही निकल ा कि दुनिया की हर स्त्री को शिक्षित होना चाहिए क्योंकि उसके जीवन संघर्ष का अंतिम उद्देश्य अपनी और पारिवारिक उन्नति है, जिससे देश की प्रगति जुड़ी है। यही जीवन संघर्ष का अंतिम पड़ाव है। इति...

❖ कवितायें

सरिता कपूर
कवयित्री

ऑटिज्म (स्वलीनता)

अक्षरों का कोई आकार नहीं होता ,
समझ का कोई आधार नहीं होता ,
विचारों के रंग मन में उठते तो थे ,
पर शब्दों पर मेरा कोई अधिकार नहीं होता ।
क्यों सबकी हंसी का पात्र बनी थी ?
मैं किसी नाटक का किरदार नहीं थी ।
किसी तुलना या परीक्षा का भय नहीं था ,
क्योंकि लिखूं चाहे जितना मैं मधुर होकर ,
परन्तु ! हर बार , कर्कश परिणाम वही था ।
मेरी असफलताओं के आसमान में ,
एक इन्द्रधनुष का उदय हुआ था ।
अक्षरों को आकार मिला था ,
विचारों को आधार मिला था ,
आत्म - विश्वास का संचार हुआ था ,
छिपी हुई कुशलताओं का भी उद्धार हुआ था ।
इस कविता का सार गुरु से प्रारंभ होकर ,
मुझ पर खत्म हुआ है ।
गुरु ने सींचा मेरी बुद्धि को ,
तभी मेरा जीवन प्रकाश से बागवान हुआ है ,
तभी मेरा जीवन प्रकाश से बागवान हुआ है ।।

चरण अंग विच्छेद

जिन्दगी ने एक दिन जब आगे बढ़ने की ,
प्रेरणा मन में जगायी --
मन में इन्द्रधनुष का उदय होते ही ,
अकेली ही अपनी राह पर निकल पड़ी ।
असफलताओं के आसमान में ,
इन्द्रधनुषी विचारों को आधार मिला ।
आत्मविश्वास का संचार हुआ ,
छिपी कुशलताओं का उद्धार हुआ ।
मन में नयी चाहत भर हौसलों की ,
बुलंदियों को छूने --
निकल पड़ी अपनी खूबियों को स्वरूप देने ।
बचपन में ही दुर्घटना में दोनों पैर गँवाकर भी ,
आत्मविश्वास से रक्त में बहती ,
निज संवेदनाओं को छायाचित्रण की कला से ,
तंग मानसिकता को नवरूप देने चली ।
मन से हीनता की भावना को हटा ,
जीवन को उमंग के रंग से सजाने निकल पड़ी ।।

घर

रात को एक सपना देखा ,
सपने में एक घर अपना देखा ।
नौकर चाकर घूम रहें हैं ,
हम मस्ती से झूम रहें हैं ।

दो दो गाड़ी खड़ी हुई हैं ,
रंग बिरंगी सुन्दर सुन्दर ।
ड्राइवर भैया चला रहें हैं ,
बैठ उसमें हम खुश हो रहे हैं ।

रसमलाई हम खा रहे हैं ,
टाफी चाकलेट उड़ा रहे हैं ।
गीत संगीत भी चल रहा है ,
संग उसके हम नाच रहें हैं ।

सुबह हुई और नींद खुली ,
पाया अपने को घर ही में ।
मम्मी पापा हैं पास खड़े ,
जहां खुश हो जीते हर पल में ।

नटखट

नील गगन से छम-छम करती
उतर रही है बरखा रानी
पायल बजाती रुन-झुन ,रुन-झुन
रिमझिम कर पानी बरसाती
गरज गरज कर बादल आये
तिस पर वो बिजली कड़काएं
नटखट बच्चे खूब शोर मचाएं
छपछप कर सब खेल रचाए
बना कागज की नाव चलाएं
मैं नन्हीं सी गुड़िया रानी--
झमाझम बारिश से मन डर जाए
मम्मी लोरी गा- गाकर सुलाएं ।

स्वार्थ

आज इंसान अपने स्वार्थ तले इतना खो गया है , कि
दूसरे की पुकार को बहाना बता समझौता भूल गया है ।
जोखिम उठाकर खोदी गई कब्र ,
किसी और के लिए कैसे खाली कर दें ?
मेरा मेरा न कर , समन्वय स्थापित कर ,
उसमें दोनों अपनी अपनी जगह सुरक्षित कर लें ।
अन्यथा फैसले का अंधकारी रथ ,
फैसले की गुहार - पुकार में ,
कुंठा और विफलता के दलदल में फंस जाएगा ।
हमारी फैसला देने और पाने की भूख ,
जहां तहां यहीं बिलबिलाती रह जायेगी ।
उठ जाग , और नित नई - नई त्रस्तताओं से ,
अपने को बचा ले ।
जमाना चाहे कितना भी बदल जाए,
रिश्तों की गरिमा को भरोसे की जमीं पर ,
एक दूसरे से पुनः सामंजस्य से स्थापित कर ,
अपने जीवन को सार्थक बना लें ।।

पर्यावरण

स्वच्छ हवा , उगता सूरज ,
कुदरत के रंग , तुम क्या भूल गए?
तुम्हारे लिए सुंदर कलियां ,
कोरक की कोख में खिले फूल ,
उनपर भंवरों व तितलियों का मंडराना ,
क्या सब निरर्थक है?

तुम प्रदूषण में योग देकर ,
प्राकृतिक संपदा से भक्षण के साधन बटोरकर,
उसकी पहचान को रौंदकर ,
हे स्वार्थी मानव ! तुम संतुष्ट नहीं हुए ?
भौतिक विवशता से परे ,
इस धरती मां की उर्वरा शक्ति पर पुनः भरोसा रख ।
फिर देखना -----
बसंत आने में देर न लगेगी ।
ढेरों कोमल कलियों ,
कोरक की टोकरी में ,
खिले रंग- बिरंगे फूलों व फलों से ,
सुन्दर बगिया महक उठेगी ।।

मेरे अल्फाज

रास्ते से भटका हुआ राही सा दीख रहा है ,
अपना सा होकर भी क्या सखा हो नहीं सकता ।

लड़खड़ा कर चलते हुए बीमार सा लगता है ,
मन का संतुलन खोकर भी बंजारा हो नहीं सकता

संसार की बुराई कर खुद ही दोषी बन बैठा ,
दार्शनिक विचार रख मन से हारा हो नहीं सकता।

ध्यान लगाए बैठा जो ईश्वर में तल्लीन है ,
पूजा-पाठ न कर भी बेसहारा हो नहीं सकता ।

हृदय हिलोरे लेता पर आंखे शांत दिखती है ,
बिना किसी की राह तके मौन से गुजारा हो नहीं सकता।

पक्षियों संग वह बैठ मीठे गीत गुनगुनाता है ,
भँवरे संग फूलों सा क्या नजारा हो नहीं सकता ।

जाने पहचाने चेहरे को याद करने की कोशिश है,
इतना अपनत्व देकर क्यूं हमारा हो नहीं सकता।
उसकी मुस्कुराहट ने मन को सुकून दिया है ,
मेरी छाया बन अब क्या ऐसा नजारा हो नहीं सकता।

कदमों से कदम मिला निशानी बन ही जाता है ,
कदमों तले मेरे प्रतिबिंब सा दूसरा सहारा हो नहीं सकता ।

अमृतकाल

प्रातः काल की सूर्य रश्मियां ,
नई सदी की काव्य पंक्तियां ,
करती हैं संबोधन, मानवमन उद्बोधन--
सत्कर्मों के मीठे रस से ,
जीवन को अमृतमय कर लें ,
व्यथा बनेगी भोर फागुनी ,
राहें होंगी सहज सावनी ।

उर में नित स्वप्नों की आशा ,
लेकर तुम मशाल हाथ में ,
चीर अंधकार का मस्तक ,
स्वप्नों को साकार तुम करना ।

आजादी के अमृतकाल का उत्सव,
आज मनाने हम उत्सुक हैं ,
नई सदी के इस पुस्तक के ,
हर पन्ने को पढ़ना होगा ,
उमंग दिलों में सबके भर ,
पल पल अपने ख्वाबों को ,
पूर्ण मनोरथ करना होगा ।

तभी हर जुंबा पे चर्चा ये होगी ,
ऐसा सुंदर ये देश है मेरा ,
इस शान में मस्तक उठ सकेगा ,
ऐसा सुंदर ये देश है मेरा ,
जय बोलो जय भारती , जय बोलो जय भारती ।

खुद को ढूंढ़ लाऊँगी

सूर्योदय के होते ही आत्मविश्वास मन में भर,
पुनः स्वच्छ नीले आसमान देखने की मन में लालसा रख ,
जिंदगी के हर बंधन से मुक्त, पिंजड़े से बाहर आ ,
एक न एक दिन सखियों संग अपना ,
मुक्ति पर्व मनाऊँगी और खुद को ढूँढ़ लाऊँगी ।

आंखों में जल का दरिया भरकर निकलती ,
फूल सी मासूम परियों सी है लगती ,
चेहरे पर लोगों के कंटीली झाड़ियां सी दिखती ,
जमाने की भीड़ में इज्जत की उम्मीद क्या लगाती
जब खुद के ही घर में सहम खुद को ढूंढ़ लाऊँगी?

धर्मग्रंथों की बातों में , देवी पूजन की विधियों में ,
जघन्य अपराध भरी अधर्म की काली रातों में,
फूलों की लता में सर्प जैसी रस्सी बन झूलते हुए,
फिर इतने दर्द से लड़ते - लड़ते खुद को ढांकती ,
झरोखे से आती हवा से भी खुद को ढूंढ़ लाऊँगी ।

खामोश गुड़िया नहीं मैं जमाने की नज़रों को पढ़ ही ल
`ती ,
कोख जिसकी से ईश्वर जन्मता वही खुद की ही कोख में मारी जाती ,
हिरण सी छलाँग घर के अंदर ही लगाती ,
घर से लक्ष्मण रेखा पार करते ही रावण से चेहरे देखती ,
हादसों की हर मीनार में चिनवाकर भी अब खुद को ढूंढ़ लाऊँगी ।

अपने आंचल में गमों के अफ़साने लिए ,
वक्त की छाती पर गुनहगारों का नाम लिख दिया है ,
आंचल के भारतीय न्याय संहिता से बांध ,
नीले आसमान तले हर मौसम में हँस कर कहती ,
शायद अब तो खुद को ढूंढ़ ही लाऊँगी , ढूंढ़ ही ल
ाऊँगी ।

बंटवारा

घर के इस बंद दरवाजे को देख ,
बीती बातें , गुजरी रातें ,
न जाने क्यूं बहुत याद आती है ।
वो बड़ा सा आंगन , उसमें रखी चारपाई ,
सूर्योदय होने से पहले ही ,
चिड़ियों की आवाज से आंखों का खुलना ,
सर्दी की धूप , प्यारी सी छांव ,
बादलों का आना , वर्षा का होना ,
न जाने क्यूं बहुत याद आते हैं ।
एक कागज़ के टुकड़े पर हस्ताक्षर के होते ही ,
अपना प्यारा सा घर बंटवारे में मकान बन जाता है ,
जो था कभी अपना पल भर में गैर बन जाता है ।
किलकारियों की गूंज को ,
अपनों की भीड़ में अकेला कर,
रिश्तों की खाक़ पर यह बंटवारा ,
हंसी ठिठोली से भरा यह आंगन ,
सूना कर जीत गया बंटवारा ।
जिसकी यादें , इस बंद दरवाजे को देख ,
आंखों के आगे सहसा चली आती हैं ।
न जाने क्यूं प्यार के उन दो पलों की बातें,
वक्त बेवक्त याद आ ही जाती हैं ,
वक्त बेवक्त याद ही जाती है ।।

मैं बेरोजगार हूँ----

डिग्रियां हाथ में लिए विश्वविद्यालय से निकल ,
बिना राह की डोर हाथ में लिए सहमा - ठिठका ,
जब गाँव वापिस पहुंच घर पर कदम रखा ,
झिड़कियों की पंक्ति में अपमान के स्वर ,
आंखों में झांकती उपेक्षा संग समीक्षाओं के राग ।

भारी मन लिए बिखरते सपनों को संजोने ,
घर से बाहर फिर गाँव से दूर निकल पड़ा,
राह ढूंढ़ता हूं आज में कल के नये क्षितिज की ।
दो जून की रोटी , हाथ में काम,
हम बेरोजगारों के हिस्से इतनी आस ।
हर पल पथ जोहता न इससे ज्यादा ,
न इससे कम , न इसके अलावा न इससे अलग ।

गाँव की दुनिया में कम उम्र में शादी ,
प्रेम संगिनी को आशंकित है करता ,
आंखों में उसके फलवती होने का भय,
उस भय से मेरा पौरुष स्तंभित हो जाता ,
जिसमें मेरा प्रतिबिंब उपजेगा समस्याओं के बीच,
मासूम के फलने - फूलने की गहन चिंता लिए,
मेरे रोटी-कपड़ा और मकान के सपनों का पक्षी,
नहीं भर पा रहा आकाश में---स्वच्छंद उड़ान ।

जीवन की इस दारुण गाथा को मन में छिपाए,
टूटे सपने लिए भटकता हूं मरुस्थल में ,
क्योंकि बेरोजगार हूं मैं -- क्योंकि बेरोजगार हूं मैं ।

बारिश

भरी बारिश में आकर इस घर को देखना ,
बारिश की बूँदें इस फूस की झोपड़ी में टपकती ,
आज घर में चूल्हा भी न जल सका ,
घर के सामने पानी ही पानी ,
और रूंधे गले को पीने का साफ पानी भी नहीं ,
पर खाली पेट मासूम की निगाहों में शिकस्त नहीं।

जीने की ललक को जिन्दा रख ,
सपनों की खनक से उदासी ,
दूर करने का इंतजार है इसे ,
कुछ देर यूं ही बादल बरसेंगे सावन में झूमेगें
और ये मस्त निगाहें लालसाओं से दूर,
जिसके भोलेपन में मस्त आनंद की सनक है ।

और तभी बादलों को उड़ता देख
स्वप्न पूरे करने का विश्वास ,

❖ लघुकथायें

सरिता कपूर
कवयित्री

दृढ़निश्चय

माघ का महीना और कुनकुने जाड़े का खुशनुमा मौसम...रियाना की खुशी का ठिकाना नहीं था । इतने सालों बाद गांव वापिस आकर अपनी मां व छोटी दोनों बहनों से मिलने को वह बेताब थी ।

पुत्र न होने के दुःख से रियाना के पिता भीमा ने यह बात दिल को लगा ली , और बीमारी से कमजोर होते गये...और अंततः चल बसे । रियाना तब सात साल की थी , बड़ी लड़की होने के कारण अपनी मां व बहनों का सहारा बनने की मन में ठान, पढ़ाई करती और मां का हाथ बटाती।एक दिन झोपड़ी के छज्जे की मरम्मत के लिए उसपर चढ़ गई । लड़की होकर छज्जे पर चढ़ने की बात आग की तरह गांव में फैल गई । पंचायत बैठी , उसे घर से बाहर न निकलने की चेतावनी दे दी गई।

फिर एक दिन मां के बीमार होने के कारण बाजार में भाजी बेचने गई , इसकी सजा के फलस्वरूप इस बार उसे गांव से निकलने का हुक्मनामा जारी हो गया । मां और बहनों की खातिर चुपचाप चली गई। लेकिन अपने मनोबल को बनाए रख , बाहर जाकर लोगों के बरतन साफ कर अपनी पढ़ाई पूरी कर डाक्टर बन गई। कुछ समय दिल्ली में नौकरी की । फिर पैसा एकत्र कर, वापिस गांव आई । इस बार वह ठान कर आई थी , कि गांव की औरतों को एकत्र कर, लड़कियों के लिए सोच को बदलकर रहेगी । घर घर जाकर समझा बुझाकर स्त्रियों को एकत्र कर, मोर्चा संभाला और पंचायत के चुनाव में भी खड़ी हुई...जीत भी उसके हिस्से आई। अब मुखिया बनकर गांव में एक अस्पताल भी खोला । स्त्रियों के मनोबल को आधार मिल गया । पूरे गांव में परिवर्तन की मुहिम चल गयी ...बस फिर क्या था , शिक्षा व स्वास्थ्य हर लड़की की ताकत बन गए। भीमा की छोटी सी बेटी रियाना अपने सपने को सफल कर आज अपनी मां व बहनों को गांव में पुनः इज्जत और विश्वास का जीवन देकर, गांव की हर स्त्री को गर्व से जीने की प्रेरणा बन गई ।

....

किस्मत के रंग

तमंचे को मुंह में लगाते ही , एकाएक आज माला को सब याद आने लगा...अर्जुन जोकि संगीतज्ञ था ,बचपन में एक दुर्घटनावश विकलांग हो गया था , पर उसका माला के प्रति निश्छल प्रेम था । कैसी विडंबना थी ,कि अर्जुन की विकलांगता के कारण माला का विवाह , घरवालों ने बिना जांच पड़ताल के मुकेश जैसे व्यक्ति से कर दिया , जो अय्याश व गैरजिम्मेदार था।

माला की सखी विनीता अचानक वहां आ पहुँची... उसे देख माला ने अपने होश सम्हालें और उसके कंधे पर सिर रख फूट फूट कर रोने लगी । विनीता ने उसकी हालत देख उसे शांत कराने की कोशिश कर मन की बातें सुनी । तब उसे पता चला , माला की शादी में विदाई होते समय अर्जुन आया था और अपने प्रेम को ही शादी का सबसे बड़ा उपहार बताकर, एक कोने में जाकर बहुत रोया , और उसके बाद उसने घर जाकर आत्महत्या कर ली , फिर भी वह मन मसोस कर रह गयी ।

उसपर भी माला मुकेश के साथ अपनी जिन्दगी चलाने की कोशिश कर रही थी...पर नशे की हालत में उसका उग्र रूप जानवर सा होता गया , किस्मत के इन रंगीन हालतों में माला के पास जीवन को समाप्त करने के अलावा कोई रास्ता नहीं सूझ रहा था । उसकी सारी बातें सुन विनीता ने उसे बहुत समझाया ,और अर्जुन के साथ प्यार होते हुए भी शादी न करने का कारण जाना । फिर माला बोली...मुझे तो यह भी पता नहीं था , उसने अपनी संगीत एकेडमी मेरे नाम कर दी थी ।

माला की सहेली ने जब उसकी सारी बातें सुनी , तो उसने उसे समझाया कि आत्महत्या ही इसका हल नहीं है । उसने माला से कहा...मेरी राय मानो तो इस नशे में जीवन जीने वाले मुकेश से तत्काल तलाक ले ल`ना चाहिए और आत्मविश्वास से मन को मजबूत कर, स्वयं को अपने पैरों पर खड़े हो स्वयं की किस्मत को बदलकर आगे बढ़ना चाहिए।

परिस्थितियों से माला ने जीवन को सही मायने में जीना सीख लिया और विनीता से आगे बढ़ने का वादा किया । धीरे धीरे उसने खुद को सम्हाला और मुकेश से तलाक लेकर अपनी जिन्दगी की गाड़ी को आगे बढ़ाने को कदम बढ़ाए। अब उसने अर्जुन की संगीत एकेडमी को पुनः शुरू कर , उस निश्छल प्रेम को एक नयी पहचान दी ।

....

आखिरी मुलाकात

रीमा के आंसुओं की धारा बह चली , और थमने का नाम ही नहीं था। तभी नवीन ने अपना रूमाल दिया , जिससे वह अपने गालों को पोछने लगी।

पिता के न रहने के कारण बीमार मां व छोटे भाई कमल की पढ़ाई की जिम्मेदारी उसकी प्राथमिकता हो गई थी । समय की मार के कारण दोनो में कुछ ऐसा समझौता हुआ, कि दोनों ने न मिलना ही स्वीकार किया ।

ऐसा नहीं था , कि दोनों एक- दूसरे कि खबर नही रखते । जो भी जानकारी हासिल हुई, उसे सहेज कर रख लिया ।जो कभी एक दूसरे के पर्याय थे ,अलग होने की कल्पना भी असंभव थी ,पर धीरे - धीरे इतने सालों तक अपने - अपने ढंग से जीते रहे । कमल भी पढ़ाई पूरी कर नौकरी करने लगा , और फिर एक दिन उसने अपनी पसंद की शादी कर अलग हो गया ।

इन तमाम सालों , नवीन और रीमा दोनों के भीतर ही महीन खरोंचें थी , जोकि बाहर से नहीं दिखती । इस बीच मां के दिवंगत होने से रीमा बिल्कुल अकेली हो गई । उसने यह खबर सभी रिश्तेदारों की तरह नवीन को भी भिजवाई। नवीन रीमा को सहारा देने पहुंच गया । उसे लगा कि रीमा को अगर अकेले छोड़ा तो वह दिल की मरीज न हो जाए। इसलिए वह बीच बीच में उसके पास आता रहता ।

एक दिन नवीन ने रीमा से फिर से नई जिन्दगी शुरु करने की गुजारिश की । पर अब फिर वे जीवन उस बिन्दु से नहीं शुरु कर सकते थे , ये सोचते हुए वह शांत हो खिड़की से बाहर देख रही थी ।

नवीन उसके मन को सुकून देने के लिए , बोला... मैं तुम्हारे लिए तुम्हारी पसंद की कुछ किताबें भेज दूंगा । रीमा ने शांत मन से कहा , कि अब किताबें पढ़ना छोड़ दिया । मैंने चित्रकारी करनी शुरू की है । तभी नवीन हैरान हो बोला ऐसा क्यूं ? रीमा मुस्काई और बोल ी , मुझे शब्दों में शोर सुनाई देता है और चित्र बिन बोल `ही बहुत कुछ कह देते है । नवीन खामोश हो गया और बोला , चलो कही घूम कर आते हैं । बाहर क्या नया है , यह कह रीमा चाय बना लाई । चाय पीते पीते रीमा ने अपनी नौकरी व चित्रकारी के साथ जीने का फैसल ा सुना दिया । नवीन थोड़ा मायूस जरूर हुआ ,पर आज भी उसने अपनी रीमा के स्वाभिमान का सम्मान कर इस आखिरी मुलाकात के बाद , अपनी आपनी जीवन-राह पर चलने का फैसला कर लिया ।

जीवन वृत्त

सरिता कपूर

जन्मस्थान : प्रयागराज

गृहस्थान : गाजियाबाद

शिक्षा :
एम ए बी एड , गाइडेंस व काउंसलिंग डिप्लोमा

व्यवसाय :
शिक्षिका एवं काउंसलर, एवं दिव्यांग बच्चों के साथ स्वैच्छिक कार्यरत

भाषाज्ञान :
हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, पंजाबी, बंगला

साहित्यिक उपलब्धियां एवं प्रकाशन

कुछ अखबारों में लघुकथा , कविता व ग़ज़ल विधाओं में रचनाएं प्रकाशित

प्रकाशित साझा संकलन--
काव्य:
कस्तूरी,
काव्य कस्तूरी,
काव्यांकुर,
मैं स्त्री हूं,
प्रीत का पहला सावन,
धूम-धड़ाका (बाल कविताएँ),
सुनती आंखें बोलते हाथ
(दिव्यांगजनों पर कविताएँ)

लघुकथा :
हृदय के दर्पण से (लघुकथा संग्रह)

❖ कवितायें

सरिता कपूर

मन में लिए चलना होगा
तभी गम रूपी धूप निकल ,
उसके सिर को छोड़ पांव तक आएगी
और तभी चेहरे पर सच्ची खुशियों की ,
लहर छायेगी , लहर छायेगी ।।

नया उजाला

वे सिर पर बोझ ढोने से बचते ही रहे ,
हम माथे पर पसीने को टपकाकर चलते ही रहे ।

वे बीते कल की बातों के संदर्भ कहते ही रहे ,
हम आज में कल (भविष्य)की राह ढूंढते ही रहे ।

वे एक ही लकीर पर आगे बढ़ते ही रहे ,
हम क्षितिज पार नये उजाले की राह ढूँढ़ते ही रहे।

वे नवीनता को अपनाने से घबराते ही रहे ,
हम हर किरण में नये मार्ग का निरीक्षण करते रहे।

वे हर बार रूक रूक, ठहर ठहर फिसलते ही रहे,
हम कुछ कर गुजरने का संकल्प लिए बढ़ते ही रहे

वे अंधेरों को चादर की तरह ओढ़ते ही रहे ,
हम सुखी घर की आस में सपने पूर्ण करते ही रहे।

वे राहों में कांटे चुभ जाए तो बैठ रोते ही रहे ।
हम गमों को भूल जटिलताओं से निकलते ही रहे।

वे घबड़ाकर संघर्ष को नियति मान बैठे ही रहे ,
हम क्षितिज पार नये उजाले के सपने पूर्ण करते रहे ।

मित्र

तेरी दोस्ती से गुलजार जिंदगी मेरी ,
जिसने हमारी हथेलियों को जोड़ धरती बन ,
उड़ती धूल को संचित किया ,
इसी में से नन्हीं बूंदों ने झाँककर नीचे को देखा ।

बचपन में माचिस की तीलियों से ,
बनाये थे घर , सोफे , मेज और कुर्सियां ,
आज न घर , न सोफे न कुछ और ,
रह गये हैं केवल उन प्यारी यादों के सिलसिले ।

मित्र तुम्हारे आने पर आंखों में चमक ,
सदा से ही याद में बसी हैं ।
ऐसे मित्रों से यह जहां---
उन्हीं से धरती और आसमान ।

बिन मित्र के कुछ कर न पाएंगें ,
उनसे नफरत कभी न कर पाएंगें ।
आज जरूरी है जीवंत रहना ,
ऐसे दोस्तों के लिए--
जिन्होंने सांसों के ताने-बाने से ,
पत्थर पर पुष्प की तरह सदा मुस्कान भर ,
जिंदगी गुलजार कर दी , जिंदगी गुलजार कर दी।

दर्पण

दर्पण के सामने खड़े होकर ,
जब मन का मंथन करने चली ,
अकेले होने के भ्रम से ठिठककर लगा ,
मानो दर्पण ने ललकारा है ।

अचानक मोह -भंग हटा ,
सब साफ दिखाई देने लगा ,
पर फिर भी उसे ठगने की टोह में लगी,
अपने को अक्षम पाया ।

उसकी शक्ति का आभास समझ आया ,
कि यहां छल -बल का कोई मेल नहीं ,
यह तो दर्पण है , मुकुर है ,
और मैं इसकी प्रतिबिंब ।।

दुकूल

सरसराती हवा,
पर इस दुकूल को ओढ़ूं कैसे ?
इस फटे दुकूल के ,
हर छेद को निरखती हूं ।
कुछ छोटे , कुछ बड़े ,
सब मायके की यादों से जुड़े ,
मुझ रोती को , सहेलियों ने ,
बड़े प्यार से डाला था डोली में ।

शहर समता - ब्यूरो प्रमुख

देहरादून ब्यूरो - निशा अतुल्य, -91 98378 94997
जबलपुर ब्यूरो -अनीता दुबे -91 78696 43222
जौनपुर ब्यूरो - डॉ मधु पाठक,-91 94151 69522
हैदराबाद ब्यूरो -रीना प्रदीप कुमार,-91 70935 29183
भिलाई ब्यूरो - संध्या चंदेल,-91 99934 42579
गोरखपुर ब्यूरो - सरिता सिंह - 96282 04228
दिल्ली ब्यूरो - अफरोज़ अजीज, -91 96439 68797
तिनसुकिया गोलाघाट ब्यूरो - रंजना बिनानी, - 91 94355 15469
प्रयागराज ब्यूरो - गीता सिंह 94152 13851
चंडीगढ़ ट्ष्ठई सिटी - प्रभजोत कौर -91 76969 19159
इंदौर ब्यूरो - आशा जाकड़,-91 97549 69496
शिलांग ब्यूरो - नीता शर्मा -91 98630 29640
बिलासपुर ब्यूरो -संगीता बनाफर-91 70003 39148
रायपुर ब्यूरो - सीमा निगम,-91 78694 58122
कानपुर ब्यूरो - श्रद्धा श्रीवास्तव ,73765 45711
भोपाल ब्यूरो - साधना शुक्ला -91 94256 52547
जगदलपुर इकाई - स्मृति मिश्रा 'रीति'-91 93004 31143
बनारस ब्यूरो - सुनीता जौहरी, -91 6386 869 055
विश्वनाथ इकाई - सैयदा आनोवारा खातुन- 91 96787 72219
बिजनौर ब्यूरो - ऋतुबाला रस्तोगी,-91 98971 11416
धम्तरी ब्यूरो - श्रद्धा कश्यप -91 6265 018 551
बैगलूरु ब्यूरो - अंजू भारती -91 84709 77659
गोडा ब्यूरो - सरिता कपूर -91 73768 96768
सुल्तानपुर ब्यूरो - माधवी शुचि -91 83170 45106
नोएडा ब्यूरो - प्रवीणा त्रिवेदी -91 85060 60468
पटना ब्यूरो - आ. मीना परिहार -91 70708 00416
लखनऊ ब्यूरो - अपर्णा गुप्ता --91 97933 18465
मंडला ब्यूरो - डॉ अर्चना जैन -91 93007 55500
भीलवाड़ा इकाई - डॉं राजमति पोखराना 81046 39622

संस्थापक
स्व0 कन्हैया लाल, स्व0 साधना श्रीवास्तव

सम्पादक
उमेश चन्द्र श्रीवास्तव
आरएनआई नं0 UPHIN/2001/3996

उप संपादक
डा0 अरूण कुमार मिश्रा
रचना सक्सेना

Mo. 9005239332
Email-shaharsamta@gmail.com

स्वत्वाधिकारी/मुद्रक/प्रकाशक/सम्पादक उमेश चन्द्र श्रीवास्तव द्वारा इण्डियन प्रेस (पलि.) प्रा0लि0, 36 पन्ना लाल रोड, इलाहाबाद से मुद्रित कराकर 289/238ए, (अनन्त भवन) कर्नलगंज, इलाहाबाद से प्रकाशित।

इस अंक के प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं सम्पादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अन्तर्गत उत्तरदायी तथा समस्त विवादों का निपटारा इलाहाबाद न्यायालय में ही होगा।

नोएडा इंटरनेशनल एयरपोर्ट

आकाश की ऊंचाई-स्पष्ट संदेश
विकसित भारत-विकसित उत्तर प्रदेश

₹11,200 करोड़ की लागत से तीव्र कनेक्टिविटी देने वाले अत्याधुनिक ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट

नोएडा अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे (प्रथम चरण) का

उद्घाटन

नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री

के द्वारा किया गया

उत्तर प्रदेश की उड़ान – पूरे भारत की शान

- भारत की सबसे बड़ी ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट परियोजनाओं में एक
- सड़क, रेल, मेट्रो और क्षेत्रीय परिवहन प्रणालियों के बीच निर्बाध एकीकरण वाला मल्टी मोडल ट्रांजिट सिस्टम
- 2.5 लाख+ मीट्रिक टन की वार्षिक क्षमता वाला मल्टी-मोडल कार्गो हब, जिसे लगभग 18 लाख मीट्रिक टन तक बढ़ाया जा सकता है
- राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र के प्रमुख अंतरराष्ट्रीय प्रवेश द्वार के अनुरूप
- प्रति वर्ष 1.20 करोड़ यात्री क्षमता
- चतुर्थ चरण तक प्रति वर्ष 7 करोड़ तक यात्री वहन क्षमता का विस्तार
- उत्तर प्रदेश की पारंपरिक एवं हवेलियों की थीम पर आधारित साज-सज्जा, वाराणसी एवं हरिद्वार के गंगा घाट की अनुभूति वाली मल्टी लेवल टर्मिनल डिजाइन
- विभिन्न राज्यों के हैंडीक्राफ्ट्स एवं टेक्सटाइल से सौंदर्यीकरण

गरिमामयी उपस्थिति

आनंदीबेन पटेल
राज्यपाल, उत्तर प्रदेश

योगी आदित्यनाथ
मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

किंजरापु राममोहन नायडू
मंत्री, नागर विमानन, भारत सरकार

पंकज चौधरी
राज्य मंत्री, वित्त, भारत सरकार

केशव प्रसाद मौर्य
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

ब्रजेश पाठक
उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

बृजेश सिंह
राज्य मंत्री, लोक निर्माण, उत्तर प्रदेश

डॉ. महेश शर्मा
सांसद, गौतम बुद्ध नगर

सुरेंद्र सिंह नागर
सदस्य, राज्य सभा

अमित चौधरी
अध्यक्ष, जिला पंचायत, गौतम बुद्ध नगर

पंकज सिंह
विधायक, नोएडा

तेजपाल सिंह नागर
विधायक, दादरी

धीरेन्द्र सिंह
विधायक, जेवर

संजय कुमार शर्मा
विधायक, अनूपशहर

सुरेन्दर दिलेर
विधायक, खैर

लक्ष्मी राज सिंह
विधायक, सिकंदराबाद

श्रीकान्त शर्मा
विधायक, मथुरा

मीनाक्षी सिंह
विधायक, खुर्जा

राजेश चौधरी
विधायक, मांट

जयवीर सिंह
विधायक, बरौली

नरेन्द्र सिंह भाटी
सदस्य, विधान परिषद

श्रीचंद शर्मा
सदस्य, विधान परिषद

एवं अन्य गणमान्य महानुभाव

दिनांक : 28 मार्च, 2026 | स्थान : जेवर, गौतम बुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश

विकास की गति अपार-डबल इंजन सरकार

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

UPGovtOfficial CMOUttarpradesh CMOfficeUP